स्कूली भ्रमण के दौरान बच्चों का सीखना

– प्रिया जायसवाल

बच्चे अपनी मौज मस्ती के दौरान भी सीखते हैं, समूह में बेहतर काम करते हैं, सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का जिम्मा स्वयं लेते हैं और अपने नियम भी खुद बना लेते हैं– बच्चे शायद ही कोई काम चुपचाप करते हों।

बच्चे को जानने और समझने को लेकर हमारे स्वयं के अनुभव एक अभिभावक के रूप में, शिक्षक के रूप में तो महत्वपूर्ण हैं ही साथ में बाल मनोविज्ञान के विभिन्न साहित्य में भी तमाम बातें लिखी हुई है। जहां यह कहा गया है कि सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं के प्रभावशाली नियोजन के लिए सबसे पहले बच्चे को ठीक से जानना और समझना जरूरी है। इसी सन्दर्भ में बच्चे को जानने और समझने को लेकर तथा बच्चों का सीखना कैसे होता है को केंद्र में रखकर कुछ सिद्धांत तय किये और फिर अपने स्कूली भ्रमण के दौरान उन सिद्धांतों को अपने अनुभवों से टटोलने की कोशिश भी की।

बच्चे अपनी मौज मस्ती के दौरान भी सीखते हैं, समूह में बेहतर काम करते हैं, सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का जिम्मा स्वयं लेते हैं और अपने नियम भी खुद बना लेते हैं– बच्चे शायद ही कोई काम चुपचाप करते हों। एक स्कूल की कक्षा में जब गई तो देखा प्रत्येक समूह में कुछ न कुछ कारस्तानी चल रही थी, कोई चुपके से मूंगफली खा रहा था और साथ ही अपने दोस्तों को भी दे रहे थे, तो कोई किसी की चोटी खींच रहा था, किसी ने पीछे से मुक्का मारा। पर इन सबके साथ भी बच्चों को जो काम दिया गया था उसके प्रति वे सचेत थे और सब कुछ अपने आप कर रहे थे। उन्होंने ही निर्णय लिया कि कौन पेज में लिखेगा, अपनी कहानी/कविता/गाना कैसे सुनानी है, कैसे खड़ा होना है, लय ताल क्या होगी, एक बच्चे ने कहा कि मात्रा की तो बिलकुल भी गलती नहीं होनी चाहिए, एक समूह नहीं लिख रहा था। उन्होंने कहा कि हमें लिखना नहीं आता हम सुना देंगे। मैंने कहा कि गलतियों की चिंता करने की जरूरत नहीं है तो बस तुरंत ही लिखने लग गए। यह सब काम कुल 15 मिनट में हो गया था। इसके बाद सबने अपना अपना गाना और कविता सुनाई, जब बच्चे सुना रहे थे तो अन्य बच्चे उन्हें टोक भी रहे थे, अरे गर्दन थोड़ा नीची करके गा, इसको बीच में लेना चाहिए और इसको आखिरी में आदि। आखिर में सभी बच्चे बहुत खुश थे, अच्छी बात यह थी कि सभी बच्चे इस प्रक्रिया में शामिल रहे।

बच्चों की पृष्ठभूमि को समझना और उसके प्रति

संवेदनशील होना बहुत जरूरी है– स्कूल में गई तो स्कूल के बाहर एक बच्चा खड़ा था और उसकी निगाहें स्कूल की और टिकी थीं। मैंने पूछा यहां क्यों खड़े हो तो उसने बताया कि उसकी दो बहनें यहां पर पढ़ती हैं। आगे बताया कि वो पहले अमुक स्कूल में पढता था, कक्षा 3 पास करके उसे स्कूल छोड़ना पड़ा क्योंकि वहां की मैडम ने उसे निकाल दिया। कारण बच्चे ने नहीं बताया, उसने कहा मुझे नहीं पता कि मुझे क्यों निकला गया। मैंने पूछा कि पढना चाहते हो तो उसने कहा हां। मैंने कहा कि जब तुम्हारी बहनें यहां पढ़ती हैं तो यहां एडमिशन ले लो। मैंने पूछा कि मम्मी पापा क्या करते हैं तो वह एक अलग ही मिजाज में बोला कि मां घर पर और पिताजी देहाड़ी करते हैं, और वह बिहार का रहने वाला है। फिर मैं उसे स्कूल में ले गयी। उच्च प्राथमिक स्कूल भी इसी परिसर में है। मैडम उसे पहचान गयीं। उन्होंने कहा ये तो सीता राम है अभी कुछ दिन पहले एडमिशन के लिए आया था हमने कहा कि अपने घर से किसी को ले आना हस्ताक्षर करने हैं उसके बाद आया ही नहीं। आयु के हिसाब से हम इसका छठी में एडमिशन लेने वाले हैं। खैर, फिर उसको मैडम कक्षा में ले गयीं। थोड़ी देर बाद मैडम आयीं और उन्होंने बताया कि कक्षा में सभी बच्चे उसको देख कर हंसते हैं, क्योंकि इसकी मां भीख मांगती है और पिता शराब पीकर इसकी मां को मारता है। इसकी बहनें भी ऐसे ही फटे पुराने कपड़ों में स्कूल आती हैं। मैं सोच रही थी कि उसने मुझसे फिर यह क्यूं बोला कि उसके पिताजी दिहाड़ी करते हैं। क्या यही कारण था कि इस बच्चे ने पहले वाला स्कूल छोड़ा या फिर कोई और बहुत सी बातें मन में चलने लगीं। इस बीच सर सब बच्चों को बाहर धूप में लेकर गए और गोल घेरे में उनसे कुछ बातचीत करनी शुरू की, जैसे नोटबंदी पर चर्चा और फिर कुछ सामान्य ज्ञान के प्रश्न। कुल 10–15 मिनट मैं उन सभी के बीच में रही और सीताराम मुझे सबसे कटा हुआ ही दिखा, अब पता नहीं कब तक वह इस स्कूल में रहेगा और अपने पिताजी को लेकर आ पायेगा या नहीं। इस सन्दर्भ में बच्चे किस परिवेश से आते हैं, वे किस तरह की परिस्थितियों से जूझते हैं, इन्हें समझना और उन सबके साथ बच्चे से संवेदनशीलता से खुद भी पेश आना और अन्यों को भी इस और संवेदनशील बनाना बहुत जरूरी है।

क्या कुछ चीजों को पुस्तक में से नोट बुक में लिख लेना ही सीखना है– कक्षा 3–4 के के बच्चों से बातचीत के दौरान मैंने पूछा क्या कर रहे हो तो एक बच्चे ने अपनी कॉपी दिखाई, उसमें उसने इंग्लिश में एक कविता लिखी थी, मैंने ऐसे ही कहा क्या लिखा है जरा पढ़ कर तो सुनाओ तो वो उसे नहीं बोल पा रहा था। मैंने कहा कि ये कविता आपने कहां से लिखी तो उसने कहा कि किताब में से मैडम ने लिखने को बोला था। मैंने कहा कि लिखने से क्या होगा? तो उसने कहा कि लिखने से पढ़ना आ जाता है। मैंने कहा आपने लिखा पर क्या आप किताब में से इसे पढ़ पा रहे हो। तो उसने ना में सर हिला दिया। मैं यहां सिर्फ यह समझने की कोशिश कर रही थी कि बच्चा ठीक से बातचीत भी कर रहा है और अगर अपनी बातचीत की भाषा में उसको कुछ लिख कर पढ़ने को बोला जाता तो वह सहज रूप से बोल भी लेता पर बच्चे के मन में यह धारणा कि किताबों में लिखे को कॉपी में उतारने से ही उसे पढ़ना आ जाएगा पता नहीं कितना सही है और तब जब कि वो शब्द और वाक्य भी उसके लिए अर्थहीन हैं।

एक अन्य उदहारण और देखते हैं– एक कक्षा में मैडम ने बच्चों के लिए ब्लैकबोर्ड पर अंग्रेजी के कुछ शब्द लिखे और उन्हें कॉपी में उतारने को कहा। कुल 15–20बच्चों में से ज्यादातर बच्चे सही स्पेलिंग के साथ साथ इंग्लिश के वड्र्स लिख पाए थे, देख कर अच्छा भी लगा। एक वर्ड लिखना था 'baby' एक बच्ची ने लिखा था 'paby' इसी तरह bed को भी उसने ped लिखा था फिर मैंने उससे कहा कि 'b' लिखो तो उसने कहा कि छोटे में या बड़े में, मैंने कहा कि छोटे में। उसने सही से लिखा। फिर मैंने कहा कि 'p' लिखो तो वो भी सही लिखा। यानी उसे दोनों ही alphabates की पहचान थी। फिर उसने baby की spelling में paby क्यूं लिखा होगा। दूसरी बच्ची ने कहा जल्दी–जल्दी में दिमाग ऐसे ही हो जाता है, फिर मैंने उस बच्ची से पूछा कि जल्दी के कारण ऐसा हुआ क्या? तो उसने कहा कि नहीं, पर उसे भी नहीं पता था कि ऐसा क्यों हुआ जबकि उसे तो 'p' और 'b' का फर्क पता है।

एक और उदाहरण – एक अन्य कक्षा में मैडम ने वड्र्स लिखवाने के बाद पुस्तक में से कविता करवाई– outdoors, बच्चों को अंगुली रखकर हर वर्ड और सेंटेंस को बोलना था और वो भी कई बार दोहराना था, पहले 2 लाइन फिर 1 पैरा और फिर पूरा पेज एक साथ और वो भी बार–बार। सब बच्चे ठीक से बोल पा रहे थे और उन वड्र्स को भी पहचान गए थे। यह सब होने के बाद मैंने अपनी डायरी में कुछ वड्र्स लिखे– कुछ उस कविता में से थे और कुछ अपनी तरफ से। कविता वाले वड्र्स तो बच्चे फिर भी पहचान पा रहे थे (sky, water, mountain

etc) पर दूसरे वर्ड्स बताने में (earth, shoes, sharp etc) दिक्कत हो रही थी। earth के लिए बच्चों ने कहा कि ये strong, eagle लिखा है, sharp के लिए कहा कि snake, sheep लिखा है। तो पढ़ने में दरअसल बच्चे कर क्या रहे होते थे? इन दोनों ही उदाहरणों से एक बात तो स्पष्ट होती है कि शिक्षक को शायद इस चीज पर काम करने की जरूरत है कि कहीं जिस तरीके से मैं पढ़ा रहा हूं/सीखने–सिखाने की प्रक्रियाएं नियोजित कर रहा/कर रही हूं वो बच्चों के लिए कारगर साबित हो भी रही है या नहीं?

सीखने की प्रक्रिया में अवधारणात्मक समझ बहुत महत्वपूर्ण है–

– सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं में यह भी समझना होगा कि बच्चे सवाल किस तरह हल करते हैं– एक बच्चे की गणित टेस्ट की कॉपी पर नज़र डालते हैं। उसने जोड़ के सभी सवाल सही कर रखे थे, नियम वही था हासिल को ऊपर लिखना। घटाव, गुणा और भाग के सवाल कुछ इस तरह कर रखे थे।

– 6478 – 3349 = 3141

– 73 x 7 = 581

– 993 x 4 = 3082

बच्चे से बातचीत करने पर मुझे समझ आ गया कि दिक्कत पहाड़े की है जो उसने रट रखे हैं। मैंने उससे बीच बीच में से बहुत से पहाड़े पूछे। उसने अंगुलियों पर गिन कर बहुत से सही जवाब भी दिए, पर 20 के बाद उसे पहाड़े बिल्कुल नहीं आते थे। फिर उसके साथ जोड़ और गुणा की प्रक्रिया करके पहाड़ो का अभ्यास किया। 73 x 7 वाले सवाल में हुआ यों कि उसे 7 x 8 = 56 याद रह गया और फिर 2 की हासिल लगा कर उसने 58 कर दिया। बच्चे को तो लगा था कि उसने सही किया है पर बाद में जब उससे दोबारा पहाड़ा बनाने को बोला तो उसे शायद समझ आ गया था कि गलती कहां हुई है। फिर इस तरह जोड़ और गुणा के साथ उसने बहुत से पहाड़े बनाये। इसी तरह कुछ पैटर्न घटाव के सवाल में भी दिखता है। तो शायद बच्चे की कॉपी में लाल घेरा बनाने के बजाय और कम नम्बर दिखाकर उसे लज्जित करने के बजाय उसके साथ बातचीत कर उसके जवाबों का विश्लेषण करने की भी जरूरत है कि आखिर दिक्कत कहां आ रही है।

– गणित में डिक्टेशन– सब बच्चे सर को घेर कर अपनी–अपनी कॉपी दिखा रहे थे। बच्चों ने बताया कि हम डिक्टेशन लिख रहे हैं, अच्छा, मुझे भी जिज्ञासा हुई देखने कि क्योंकि मेरे लिए गणित में डिक्टेशन शब्द नया था। कॉपी देखने पर पता चला कि बच्चों ने इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, दस हजार और लाख के कॉलम बना रखे थे, सर कोई भी संख्या बोलते और बच्चों को वो उसके मान के अनुसार लिखनी थी। बच्चों ने बताया कि देखो सर ने मेरा एक नंबर काट लिया वरना मुझे पूरे दस मिलते, देखो इसने तो 0 ठीक से भी नहीं बनाया था फिर भी इसका नंबर नहीं काटा, कुछ बच्चों के तो सर बस सीधे ही लाल पेन से गलत का निशान बना रहे थे, बच्चों को पता भी नहीं चल रहा था कि नंबर क्यों कटे हैं। बच्चों में एक होड़ मची हुई थी और बच्चे इसे एन्जॉय भी कर रहे थे। पर बच्चों के साथ इस तरह काम करने के लिए जरूरी है कि बच्चे को सीखने की प्रक्रिया के साथ फीडबैक भी मिलता रहे कि आखिर उनसे चूक कहां हुई है।

– **कई बार शिक्षक स्वयं तो स्पष्ट होते हैं कि हम क्या पढ़ा रहे हैं पर बच्चों तक वह समझ कितनी पहुंच रही है इसकी स्पष्टता होनी भी बहुत जरूरी है–** कक्षा–1–2 के लिए मैडम ब्लैकबोर्ड पर लिखती हैं कि बच्चों, 7 और 3 कितने होते हैं–कुछ बच्चों ने कहा 10 और इस बीच मेडम ने + का चिन्ह बोर्ड पर नहीं बनाया और इसी तरह सवाल बनवाती रहीं। फिर मैडम ब्लैकबोर्ड पर लिखती जा रही थीं और पूछती जा रही थीं–बच्चों दो एक – बच्चे बोले 2, दो दूनी– बच्चे बोले चार, और लिख इस तरह रही थीं 2 1 2 यानी कि गुणा का चिन्ह नहीं था पूरे 2 के पहाड़े में– मुझे लगता है कि गणित में सारी समस्या यहीं से शुरू हो जाती है, जब बच्चे चिन्हों की पहचान नहीं कर पाते और एक तरीके से जब संख्याएं लिखी जाती हैं तो गुणा में भी जोड़ रहे होते हैं और + के चिन्ह में भी– कारण और भी हो सकते हैं।

वास्तव में तो शिक्षण कार्य बहुत धैर्यपूर्ण तरीके से करने वाला काम है। बहुत सी चीजों की गहराइयों में जाना होता है। अगर हम गौर से देखें तो चीजों के तार पता नहीं कहां–कहां जुड़े हुए हैं, जिन्हें समझना बहुत जरूरी है, जो हमसे चिन्तनशील होने की मांग करता है और इस चीज का अभाव होने पर कुछ बच्चे पीछे छूटते चले जाते हैं और एक शिक्षक को लगता है कि मैंने तो अपना काम पूरी ईमानदारी से ही किया है लेकिन परिणाम बेहतर नहीं हैं।

(लेखिका अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन देहरादून से जुड़ी हैं)